आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 13 | उदयपुर रविवार 15 जुलाई 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

ज्ञानसागर छापाखाना की ख्याल सेवाएं

लोकनाट्य ख्यालों का राजस्थान खजाना रहा है। लोकमंच की विविधता में ख्याल विधा ही यहां की एक ऐसी सशक्त विधा रही है जो आज भी लोकानुरंजन का सबल माध्यम बनी हुई है। यों यहां के विविध अंचलों में प्रचलित ख्यालों की अपनी विशिष्ट शैलियां किंवा रंगतें हैं जो गायकी, नृत्य अदायगी तथा मंचीय परिवेश में अपनी निराली विशेषताएं रखती हैं। सबसे पहले ख्याल पुस्तक किस लेखक की कहां छपी, इस सम्बन्ध में किसी निर्णय पर पहुंचना बड़ा मुश्किल कार्य है कारण कि प्रारम्भ में जो पुस्तकें प्रकाशित होती थीं उन पर किसी लेखक आदि का नाम नहीं दिया जाता था।

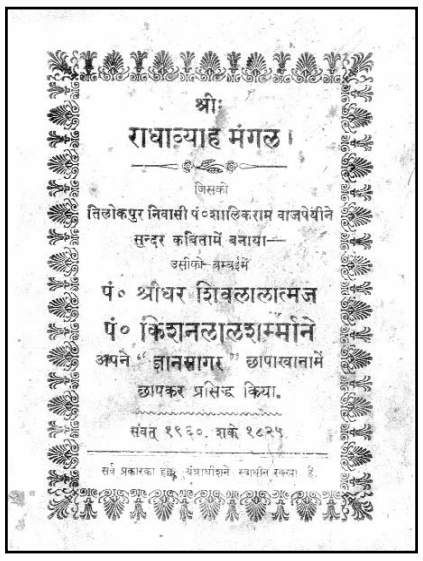

श्री:
राधाव्याह मंगल।
जिसको
तिलोकपुर निवासी पं०शालिकराम वाजपेयीने
सुन्दर कवितामें बनाया—
उसीको बम्बईमें
पं० श्रीधर शिवलालात्मज
पं० किशनलालशर्म्माने
अपने "ज्ञानसागर" छापाखानामें
छापकर प्रसिद्ध किया.
संवत् १९६०. शके १८२५
सर्व प्रकारका हक्क यंत्राधीशने स्वाधीन रक्खा है.

लेखक, प्रकाशक, मुद्रक आदि के अतोंपतों की परम्परा बहुत बाद की है। प्रारम्भ के ख्याल लेखकों को अपने नामांकन से किसी प्रकार का मोह नहीं रहता था। वह तो जन-सामान्य के बीच रहकर जो कुछ लिख देता उसका सर्वाधिक प्रचार-प्रसार मात्र चाहता था और सामूहिक चन्दे अथवा किसी व्यक्ति विशेष के प्रयत्न-पैसों से उसका प्रकाशन हो जाया करता था। हस्तलिखित ख्याल-गुटकों में भी कहीं कोई लिपिकाल, लिपिकर्ता अथवा किसी लेखक आदि का नाम इसीलिए नहीं

मिलता। नाम-ठाम से सर्वदा दूर रहकर ही निस्वार्थ भाव से इस प्रकार के सामाजिक अनुरंजनों के प्रयास होते थे। अधिक से अधिक हुआ तो उस्ताद (गुरु) का नाम प्रारम्भ, अन्त अथवा बीच में अवश्य स्मरण कर लिया जाता था।

अब तक की शोध-सर्वेक्षण यात्राओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सर्वप्रथम सर्वाधिक ख्याल पुस्तकें बम्बई से प्रकाशित हुईं और उन्हें प्रकाशित करने वाले ज्ञानसागर लीथो प्रेस (ज्ञानसागर छापाखाना) के मालिक पंडित श्रीधर-शिवलालजी थे। शिवलालजी किशनगढ़ के निवासी थे। श्रीधर इनके लड़के थे। शिवलालजी भी अच्छे ख्यालप्रेमी थे। उन्होंने अपने समय में कई खिलाड़ी और ख्याल लेखक तैयार किये। ख्यालों की सर्वाधिक पुस्तकें उन्होंने ही अपने स्वयं के प्रेस से छापी और इस क्षेत्र को सर्वाधिक समृद्ध एवं रंगशील बनाये रखा।

ये पुस्तकें हजारों की तादाद में प्रकाशित होती थीं। अत: इनकी कीमत भी सर्वसुलभ के उपयोगार्थ बहुत कम रखी जाती थी तब भी इनकी बिक्री से अच्छा पैसा हाथ लग जाता था। लोकनाटकों के प्रचार-प्रसार, लेखन-प्रकाशन आदि के क्षेत्र में पं. श्रीधर-शिवलालजी का योग ख्याल-साहित्य के इतिहास में कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता अपितु इस साहित्य का इतिहास ही स्वयं उन्होंने तैयार किया, कहें तो भी कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

जनता जनार्दन में बढ़ती लोकप्रियता के फलस्वरूप बम्बई में और भी कई प्रेसों ने ख्याल-साहित्य के प्रकाशन का दायित्व अपने हाथ में लिया। इनमें (1) करूणेश प्रिन्टिंग प्रेस (2) यूनिवर्सल प्रेस (3) अच्युत प्रिन्टिंग प्रेस (4) बम्बई सिटी प्रेस (5) जगदर्शन छापाखाना (6) हनुमान विजय प्रेस (7) लक्ष्मी वेंकटेश्वर स्ट्रीट प्रेस (8) मयूर प्रेस आदि ने धड़ल्ले से ख्याल पुस्तकें छापकर इस क्षेत्र को इतना विकास और विस्तार दिया कि राजस्थान के बाहर के भी कई लेखकों ने प्रभावित होकर ख्यालों की रचना की और इन प्रेसों से अपनी पुस्तकें प्रकाशित करवाईं। इसके बाद दिल्ली, उज्जैन, नीमच, मथुरा, धूलिया आदि स्थानों से ख्याल-पुस्तकें छपनी प्रारंभ हुईं। राजस्थान में जोधपुर, जैसलमेर, भीलवाड़ा, किशनगढ़, डीडवाना, अजमेर, कुचामण, भरतपुर, बीकानेर तथा जयपुर ख्यालों के मुख्य प्रकाशक स्थल रहे हैं।

इन ख्यालों के विषय लोकजीवन में प्रचलित कथा, कहानी, किस्सों, गीतों, वार्ताओं तथा गाथाओं के मुख्य कथानक होते थे। पौराणिक, धार्मिक कथानकों के साथ-साथ सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जबर्दस्त बगावत के बीज अंकुरित हुए रहते थे। ये ख्याल प्राय: सचित्र होते थे। चित्रों में मुख्य पात्र अपने रूपाभिनय में दिखाये जाते थे ताकि ख्याल प्रस्तुतकर्त्ता को पात्रों की वेशभूषा, अभिनय तथा भावभंगिमा का पूरा-पूरा आभास हो सके और तदनुकूल उस चरित्र विशेष को वे अपने में ढालकर उसका सफल मंचन कर सकें।

बम्बई का ज्ञानसागर छापाखाना सन् 1940 के लगभग किशनगढ़ लाया गया। इस छापाखाने के साथ-साथ सैकड़ों की संख्या में प्रकाशित ख्याल तथा इतर पुस्तकें भी किशनगढ़ लाई गईं। ख्याल सर्वेक्षण के दौरान 15 अगस्त 1973 को मैं किशनगढ़ पहुंचा। मेरे साथ भारतीय लोककला मंडल के काष्ठशिल्पी बस्सी निवासी मांगीलाल मिस्त्री थे। यहां दो दिन रहकर हम पं. श्रीधर शिवलालजी के ज्ञानसागर छापाखाने के मालिक श्री महावीरप्रसादजी के पास पहुंचे। जब हमने अपना मंतव्य उन्हें बताया और इस सम्बन्ध में भारतीय लोककला मंडल में किये गये कार्यों की जानकारी दी तो वे बड़े प्रसन्न हुए और अपनी समस्त सेवाएं देने के लिए सहर्ष तैयार हो गये।

उन्होंने हमें बताया कि पं. शिवलालजी को

॥श्री॥
पाकमहोबतलैलीमजनू
कोख्यालभा०
यह पुस्तक
मुंबईमें
पं०श्रीधरशिवलालजी
इन्होने
ज्ञानसागरछापखानेछा०
संवत्१९५९
सन१९०२

ख्याल-तमाशों का बड़ा शौक था। अपने समय में उन्होंने कई खिलाड़ियों को तैयार किया। वे ख्याल-रागिनियों के अच्छे ज्ञाता एवं गायक थे।

कई ख्याल उन्हें कंठस्थ याद थे जिनकी टेरें प्राय: उनकी जबान पर चढ़ी रहती थीं। उनके लड़के श्रीधर भी अपने पिता की तरह मस्तमौला थे। उनकी मृत्यु हुए लगभग 75 वर्ष हो गये। श्रीधरजी के किशनलालजी और किशनलालजी के श्रीनिवासजी हुए। श्रीनिवासजी को गुजरे 15 वर्ष हुए। श्री महावीर प्रसादजी उन्हीं श्रीनिवासजी के सुपुत्र हैं। उनकी आयु 65 वर्ष की है। उनके लड़के ब्रजमोहन भी अच्छे शौकिया कलाकार हैं। यहां की रामलीला में लगभग 25 वर्ष से ये कैकयी और मेघनाद का सफलता के साथ अभिनय करते आ रहे हैं। रामचरित मानस के आधार पर यह रामलीला आसोज में की जाती है।

श्री महावीर प्रसादजी ने ज्ञानसागर छापाखाना द्वारा प्रकाशित ख्याल-पुस्तकों की जानकारी देते हुए हमें वह विशाल हवेली बताई जिसमें पहले छापाखाना चलता था। इस हवेली में बम्बई से प्रकाशित ढेरों पुस्तकें अत्यंत ही अस्त-व्यस्त हालत में पड़ी हुई थी। इनमें से बहुत सी बरसात के पानी से गली हुई थीं। बहुत सी दीमक का शिकार बनी हुई थीं। बहुत सी फटी, कुचली तथा मैली पड़ी हुई थीं।

कबूतर के पांखों सी तितरबितर बेतरतीब फैली बिखरी उन ढेर सारी पुस्तकों में उन्होंने हमें स्वच्छंद छोड़ दिया। मैं और मिस्त्री दिनभर उन पुस्तकों में छुट्टे घूमते रहे। हमारी स्थिति घनी घास में चर रहे गंदर्भ जैसी हो गई। कीचड़ फंसे से बने हम उन पुस्तकों में फंसे रहे। कई पुस्तकें तो हमारे स्पर्श मात्र से ही अपनी काया खो बैठी। महावीरप्रसादजी इस दर्द से दुबले नहीं होना चाहते थे और उनके पास इसका चारा भी क्या था!

कौन पूछता उन पुस्तकों को अब? किससे पास जायें और वे किसको कहें कि है कोई माई का लाल ऐसा राम जो अपने तनिक परस से इन्हें अहिल्या बनाये! रंगकर्मी इतने कितनेक हैं जिन्हें इन पुस्तकों में कोई रंग नजर आता है? उन अनाथ हुई पुस्तकों में से कुछ पुस्तकें जो हमारे द्वारा सनाथ हुईं उनकी सूची इस प्रकार है।

(1) नानूलाल राणा कृत- (अ) ख्याल राजा नल को संवत् 1954 (ब) पाक महोबत लैली मजनूं का ख्याल संवत् 1958 (स)बीन बादश्याहजादी का ख्याल संवत् 1965 (द) पृथ्वीराज का ख्याल संवत् 1965 (य) जगदेव कंकाली को ख्याल संवत् 1970 (र) लैली मजनूं का ख्याल संवत् 1986 (ल) खीमजी आभलदे का खेल संवत् 2010

(2) उजीरा तेली कृत- (अ) ब्रजमुकुट, पदमावती का ख्याल संवत् 1964 (ब)अमरसिंघ हाड़ीरानी को ख्याल संवत् 1964 (स) ख्याल कवि सुंदर विद्यावती को संवत् 1981

(3) झालीराम कृत- (अ) शहजादे का ख्याल संवत् 1955 (ब) सुलतान बादशाह का ख्याल संवत् 1958 (स) छोटा कंथ को ख्याल संवत् 1985

(4) मोहनलाल जोशी कृत- (अ) छैला पणिहारी को ख्याल संवत् 1958 (ब) शंकर कैलाशवासी व राजा भर्तृहरि का ख्याल संवत् 1965 (स) सीलो सतवंती को ख्याल संवत् 1981

(5) प्रहलादीराम पुरोहित कृत- (अ) ढोल सुलतान निहालदे को ख्याल संवत् 1961 (ब) ख्याल दयाराम धाड़वी को संवत् 1961

(6) वजीरा तेली कृत- (अ) मालदे हाड़ीरानी को ख्याल संवत् 1977

(7) पं. दौलतराम सिखवाल कृत- (अ) राजा चन्द्रमिलयागिरि को ख्याल संवत् 2017

(8) शिवकरण रामरतन कृत- (अ) लांपावाला को ख्याल संवत् 1955

(9) शालिगराम कृत- (अ) खीवै आभलदे को ख्याल संवत् 1958

(10) भैरवबक्स कृत- (अ) राजा केशरसिंह और फूलांदे रानी को ख्याल संवत् 1975

(11) धन्नाधन्न कृत- (अ) छैला पणिहारी को ख्याल संवत् 1958

(12) पं. दधिमतदास शर्मा कृत- (अ)नरसी माहेरा का ख्याल संवत् 1958

(13) विप्रभाल कृत- (अ) शाहजादा सुलतान का ख्याल संवत् 1958

(14) पं. शेषदास कृत- (अ) खेल राजा केसरसिंह रानी फूलांदे संवत् 2011

इनमें से कुछ पुस्तकें निश्चय ही ऐसी हैं जो अब तक हमारी नजरों से अपरिचित रहीं। ज्ञानसागर छापाखाना और उसका ख्याल साहित्य अपनेआप में किसी शोधार्थी के शोध-खोज का एक पूरा का पूरा स्वतंत्र विषय बन सकता है।

– म. भा.

PIMS

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, उमरड़ा

(Artis Zee Floor Eco)

Flat panel detector as40 with pure technology • 3D imaging and Processing • Table Tilt Facility
Large 55 inch monitor • Advanced Exposure Control(AEC) with 5 variable parameters

।। शुभारम्भ ।।

दिनांक 01 जुलाई 2018

उदयपुर संभाग के बहु प्रतिष्ठित एवं विख्यात चिकित्सा संस्थान

पी.आई.एम.एस.

में **CARDIAC DEPARTMENT** का शुभारम्भ किया जा रहा है।
जहाँ पर दिल्ली एवं **EHCC** जयपुर में अपनी सेवाऐं दे चुके

डॉ पवन मेहता

DM, Cardio (Paediatric Cardiologist, Interventional Cardiologist)
एवं उनके प्रशिक्षित नर्सिंग व पैरा मेडिकल स्टॉफ अपनी सेवाऐं देने जा रहे हैं।

डायलिसिस की सुविधा एच.आई.वी. व हेपेटाइटिस के मरीजों के लिए उपलब्ध है।

लाभार्थियों को अन्तरंग ईलाज हेतु कैशलेस सुविधा

प्रत्येक परिवार को प्रतिवर्ष चिन्हित सामान्य बीमारियों हेतु रु. 30 हजार
और चिन्हित गंभीर बीमारियों हेतु 3 लाख तक का स्वास्थ्य बीमा कवर

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना के अंतर्गत 3 लाख तक का निःशुल्क उपचार
लाभार्थी का चयन राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम **(NFSA)** के अंतर्गत चयनित लाभार्थी (अर्थात 2रू. प्रतिकिलो गेंहु लेने वाले)

राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (RBSK) योजना

राष्ट्रीय अंधता नियंतत्रण कार्यक्रम (NPCB) के अंतर्गत
मोतियाबिंद, कंजेनिटल, व भेंगापन का उपचार

24 EMERGENCY SERVICE

आपातकालीन सुविधाएँ उपलब्ध

एम्बुलेंस सेवा

ICU • ICCU • PICU • NICU • SICU • BURN ICU

अन्य सुपर स्पेशियलिटीः मेडिकल व सर्जिकल ऑन्कोलॉजी • न्यूरो सर्जरी • प्लास्टिक व बर्न सर्जरी • यूरोलॉजी • नेफ्रोलॉजी • पीडियाट्रिक सर्जरी

अम्बुआ रोड़, ग्राम उमरडा, तह. गिर्वा, उदयपुर-313015 (राज.) 0294-3010000 www.pacificmedicalsciences.ac.in

डूंगला में पांचवीं पीढ़ी का विवाहोत्सव

डूंगला गांव मेरे गांव कानोड़ के पास ही पहले टौंक रियासत में था। कानोड़ पूरे मेवाड़ में शिक्षा नगरी के रूप में जाना गया। इसका हश्र यह रहा कि यहां के भी कई पढ़े-लिखे आजीविका की दृष्टि से बाहर जाकर बस गये। आज वहां जाकर कोई देख ले तो पूरा गांव रौनक विहीन खाली-खाली लगेगा किन्तु डूंगला शुरू से ही व्यापारी गांव रहा। इस बार जाना हुआ तो उसका फैलाव और रौनक देखकर ही दंग रह गया।

डूंगला मेरी मासी का गांव होने से बचपन में कई बार मां के साथ वहां जाना-आना रहा। मासाजी औंकारलालजी दाणी की याद तो इतनी भर है कि वे गंभीर किस्म के, पकीपकाई टकसाली बोली वाले प्राचीन ऋषि जैसे ही थे। उनका गौरवर्णा ठाठा कद और सफेद बालों का पट्टों वाला सिर मुझे बड़ा आकर्षित किये रहता। उनका निवास एक लम्बी-चौड़ी पिरोल था।

उसके बाहर नीम का वृक्ष और सजा हुआ ढालिया था। विशिष्ट अवसरों पर वह चबूतरानुमा ढालिया ही मेहमानों की बैठकी हुआ करता और दिनभर ठंडी गहरी हवा में वहां बिछे गद्दों पर हम सभी बाल-बच्चे धींगा मस्ती करते।

एक अंधे गोकुलचंदजी थे जो बारी-बारी से अपने दोनों हाथों में हमें सुलाकर जोर-जोर की झुलाइयां देते। मासी भरेपूरे डीलडौल वाली गौरवर्णा स्नेहिल प्रकृति की थी जो नाक में एक बड़ी वजनी छोटे कातरिये जैसी सोने की नथ पहने रहती थी।

मासीजी का परिवार बड़ा ठाठदार अलल-खलल वाला संपन्न परिवार था और अभी भी है। उनके भैंस का दोजा था सो दूध-दही, घी-छाछ की कोई कमी नहीं थी। उनके पांच पुत्र थे। सबका परिवार आसपास ही बसा हुआ था। जब देखो तब ही वहां सबका आना-जाना, मिलना-मिलाना होता रहता। मासीजी के लिए सभी समान थे। मां जब वहां होती तो सब जणे सुबह से लेकर देर रात तक मिलने को दो-दो, तीन-तीन फेरी लगा देते। जैसे भाई थे वैसी ही भाभियां थीं। बोली-चाली, मान-मनुहार की एक-से एक अव्वल।

मां का नाम डेलू था सो सभी के मुंह 'डेलूमासी' चढ़ा हुआ था। मासाजी अपने लड़कों को उसी तरह प्यार भरा संबोधन दे आवाज देते जैसे तारक मेहता का उल्टा चश्मा में चंपक चाचा की जबान पर जेठालाल 'जेठ्या' बना हुआ है। मासाजी भी रतनलाल को रतन्या, भैरूलाल को भैर्या, कालुलाल को कार्या, गुलाबचंद को गलाब्या और मीठूलाल को मीठ्या कहते। यही क्या, पूरे मेवाड़ में ऐसी ही बोली थी। आज भी गांवों में यह संस्कृति मुखर रूप में खुशनुमा होती मिल जायेगी।

हमारा परिवार बहुत सीमित परिवार था। बहुत बचपन में ही हम पितृ विहीन हो गये सो रतनलालजी लगभग हर माह ही आकर हमारी सुध लेते। उनके बाद कालुलालजी से हमारा अधिक हेत-व्यवहार रहा। हम इन सबको 'दादाभाई' कहते।

इन्हीं कालुलालजी के सुपुत्र शेषमलजी का हमारे साथ वैसा ही भाईचारा बना हुआ है सो इनके-हमारे हर काम-काज में आना-जाना बना रहा पर गत कुछ वर्षों से थोड़ा कम हो गया सो इस बार जब शेषमलजी के पोते मुकुंद के लड़के सुशील का विवाह मंडा तो फोन किया कि विवाह की कंकोतरी तो भेज दी है पर गई बार भी नहीं आये सो इस बार तो सपरिवार

जरूर आना है। इसमें पोल नहीं रहे। बहू वहीं के शौकीनकुमारजी जारोली की बेटी अंतिम बाला है। अंतिम बाला मुझे उन ब्याईजी की आखिरी लड़की लगी।

शेषमलजी और मैं हम उम्र हैं। इस समाचार को सुन तुक्तक ने कहा कि इस बार अवश्य जाना

चाहिये। समय अनुकूल नहीं होने से बहू रंजना तथा पोते शब्दांक और अर्थांक नहीं चल सके मगर हम दोनों ही उल्लसित मन लिए निकल पड़े।

उदयपुर से डूंगले का रास्ता बमुश्किल डेढ़ घंटे का है। वहां पहुंच सबसे अच्छा तो यही लगा कि महावीर भवन में जहां प्रात:कालीन प्रीतिभोज रखा गया था, सभी एक ही जाजम पर बैठे मिल गये। शेषमलजी सबसे निराले पगड़ी पहने बड़े प्रफुल्ल और उल्लसित मन लिये थे। तीसरी पीढ़ी के शेषमलजी के साथ अन्य भाइयों की भी तीसरी-चौथी पीढ़ी के परिवार के बीच मुझे अतीत का वह पूरा व्यतीत काल चित्रपट की तरह याद हो आया। लगा जैसे सोने के सिक्कों भरी खनखनाती मुझे एक अलभ्य मटकी ही हाथ लग गई है।

तीसरी पीढ़ी के परिजन जो मेरे हिले-मिले थे उनसे एक-एक कर मैंने उनके दोनों आजु-बाजु के स्कंध हिलाते उनकी कुशलक्षेम पूछी। उनसे छोटी पीढ़ी को अन्तर में पैठा कर उनके प्रति मंगलेच्छा व्यक्त की।

महावीर भवन ठट्ठ था। समझो पांव देने की जगह नहीं थी। वहां का पुराना जीमण ही मुझे याद आया जब सभी को पांत्ये पर बिठाकर तसल्ली के साथ भोजन कराया जाता था। शहर के प्रीतिभोज की हवा यहां भी देख मुझे यह जीमण ही भगदड़ और भागादौड़ी का लगा लेकिन गांव वालों का उत्साह आनंद परवान चढ़ा हुआ था।

उल्लेखनीय यह है कि वहां का दाणी परिवार गांव का सबसे बड़ा परिवार ही है जहां के मुख्य सदस्यों की संख्या ही सौ के पार है। यह परिवार दूर-दूर तक बड़ा नामचीन और प्रतिष्ठित परिवार माना जाता है। यहां वह नजारा मुझे सहज ही देखने को मिल गया। शेषमलजी का स्वयं का परिवार ही एक सूत्र में, एक ही जगह, एक छत्र संयुक्त रूप में है। आज के स्वच्छंद और आपाधापी के वातावरण में यह परिवार हम सबके लिए अनुकरणीय आदर्श तो है ही। इसे देखकर मुझे वह लोकगीत याद आ रहा है -

'मधुवन रो ए आम्बो मोरियो
यो तो पसर्‌यो ए सारी मेवाड़
सहेल्यां ए आंबो मोरियो
बहू रिमझिम म्हैलां सूं उतरी
या तो कर सौला सिणगार....
सहेल्यां.....
बहू थारो गेहणो
तो प्हैर बताव.....
सहेल्यां.....
सासु गेहणां ने कई पूछो
गेहणो ओ म्हारो सै परिवार
सहेल्यां..... '

इस गीत में सास अपनी बहू को कहती है- बहू! मुझे अपने गहने तो पहनकर दिखाओ। इस पर बहू कहती है- सासुमांजी, मेरे गहने तो मेरा यह सारा परिवार ही है। श्वसुरजी राजा, सासुजी रत्नों की भंडार, जेठजी बाजूबंद, जेठाणी उसकी लूंब, देवर हाथीदांत का चूड़ला, देराणी उस चूड़ले की मजीठ, नणद कसूमल कांचली, नणदोई गजमोतियों का हार, पुत्र कुल का प्रकाश, पुत्र-वधू दीपक की लौ, पुत्री हाथ की मूंदड़ी, जंवाई चंपे का फूल, पति सिर के सेवरे और मैं उनकी सेज का सिणगार हूं।

हम कितने ही बड़े हों, बड़े शहरों में बड़ी-बड़ाई के साथ रहते हों मगर गांव छूटता नहीं है। वहां की सांस्कृतिक सौरभ हमारे लिए प्राणवायु की तरह शकुन देती है इसीलिए मेरा चित्त सदैव ही मेरे बालमन से अटेपटे वे सारे दृश्य ही आज रह-रहकर जीवन-रस से संपूरित करते हैं।

- म. भा.

पोथीखाना

इंदिरा गांधी के जीवन-संघर्ष का चुनौतीपूर्ण दस्तावेज

डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर लिखित 'शहादत' नामक उपन्यास इन्दिरा गांधी के जीवन-संघर्ष की अनेक छोटी-बड़ी घटनाओं, प्रसंग-उपप्रसंगों, कथा-उपकथाओं से लेकर उनके महाप्रयाण तक का संश्लिष्ट चित्रण लिये है किन्तु इसका वास्तविक फैलाव भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की स्थितियों, प्रथम विश्व युद्ध, स्वतंत्रता के पश्चात जन्मी राजनीतिक परिस्थितियों, परमाणु परीक्षण, आपातकाल एवं ऑपरेशन ब्लू स्टार तक है।

लेखक की दृष्टि से भी यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इन्दिराजी का परिवार स्वतंत्रता संग्राम का सबसे सम्मानित परिवार रहा है जिसमें उनके दादा मोतीलाल नेहरू, पिता जवाहरलाल नेहरू, माता कमला नेहरू का योगदान अविस्मरणीय है। उपन्यास किस्सागोई रोचकता के साथ अपने विस्तृत कथाफलक के कारण राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के केन्द्रीय मुद्दों से रू-ब-रू कराता है। उपन्यास में अनेक स्थलों पर इन्दिराजी का दृढ़निश्चयी एवं तार्किक व्यक्तित्व दिखाई देता है।

अपने विवाह के सम्बन्ध में इन्दिराजी अपने पिता को समझाते हुए कहती हैं- 'आप दुखी क्यों हो रहे हैं? विवाह हमें करना है और सारा समाज परेशान है।'

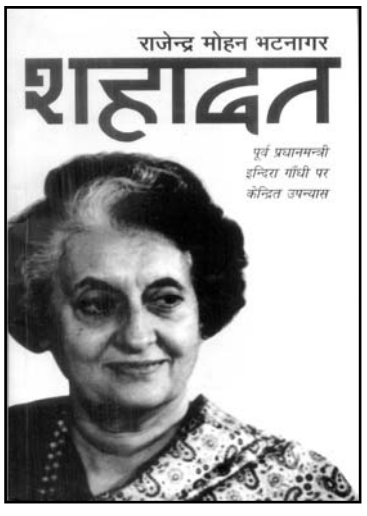

उपन्यास इन्दिराजी द्वारा लिये गये निर्णयों के पीछे की परिस्थितियों की पड़ताल भी करता चलता है। वे एक राष्ट्रभक्त, पुत्री, पत्नी, मां के रूप में दिखाई देती हैं। उन्होंने आपातकाल के बाद आई जनता पार्टी सरकार के राजनीतिक हथकण्डों का भी पूरी दृढ़ता के साथ सामना किया और सत्ता में वापसी की।

ऑपरेशन ब्लू स्टार का निर्णय इन्दिराजी के जीवन के सर्वाधिक कठिन निर्णयों में से एक था। घड़ी रात के दो बजा रही थी। उनके मन में कोई कह रहा था- 'याद रख, तू देश की प्रधानमंत्री है। तुझे देश से गहरा प्रेम है। तेरा हर फैसला जो देश हित में होगा, वह सम्पूर्ण देश की जनता का होगा। तू आगे बढ़, क्योंकि इस समस्या का दूर तक कोई दूसरा हल दिखलाई नहीं पड़ रहा है।'

लेखक इस उपन्यास के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम एवं स्वतंत्र भारत की विभिन्न परिस्थितियों की तथ्यपरक अभिव्यक्ति करने में सफल रहे हैं। उपन्यास के केन्द्र में इन्दिरा एक लाडली पुत्री, एकनिष्ठ प्रेमिका, समर्पित पत्नी, ममतामयी मां, सास एवं दादी तो है ही साथ ही दृढ़ निश्चयी स्वप्नदर्शी प्रधानमंत्री भी है। इसका प्रकाशन राजपाल एण्ड संस, नई दिल्ली-110006 से हुआ है।

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 15 जुलाई 2018

सम्पादकीय

नामों के बदलते रूपों का सोच

पिछले दिनों एक विवाह प्रसंग में डूंगला जाना हुआ। बहू का नाम अंतिम बाला सुन मुझे उन लड़कियों के नाम याद आ गये जो मेरे गांव में थीं। उनमें से कुछ तो अभी भी हैं जो अपने साथ सास, बड़ सास, पड़ सास का सम्बोधन लिए है।

एक अणचाही, बिना चाह के पैदा हुई थी। उसके पांच और बहनें उससे बड़ी थीं सो जब उसका जन्म हुआ तो अणचाही नाम रख दिया। दरअसल उसके भाई एक भी नहीं था। एक कचरी थी। उसकी भी यही स्थिति थी सो कचरा से कचरी नाम दे दिया। एक रोड़ी थी। रोड़ी वह स्थल होता है जहां दुधारू पशु- गाय, भैंस, बैल, बकरी आदि का गोबर-मींगणा-मींगणी एकत्र किया जाता है। खेती के लिए यह बड़ा उपयोगी होता है।

इसी तरह एक नाम बगदी होता है। बगदी से तात्पर्य अनुपयोगी कचरा, कूड़ा कर्कट होता है। अन्य नामों में एक मथरी यानी दही को मथने वाली, बिलोवणी नाम भी था। लड़कियां जरूरत मुताबिक पैदा हो जाती और उसके बाद आवश्यकता नहीं होने पर उसका नाम धापू रख दिया जाता। धापू का अर्थ तृप्त होने से है। चाह के अनुसार जो वस्तु मिल जाती है फिर उसकी और चाहना नहीं रहने पर यह शब्द प्रयोग में लिया जाता है। कहावत है- 'जण-जण नै धापी' अर्थात् पैदा कर-कर धप गई अर्थात् पूर्णत: संतुष्ट हो गई।

दूसरी ओर ऐसा भी देखा गया जब आवश्यकता के अनुरूप लड़के पैदा हो गये मगर लड़की नहीं हो पाई। ऐसी स्थिति में जो लड़की जन्म लेती उसका नाम चावती रख दिया जाता। इसका अर्थ भावती यानी इसकी चाहना थी। ऐसे नाम लड़कों में भी देखे गये। रोड़ीलाल के साथ बगदालाल, कचरूलाल जैसे नाम सुनने में आते हैं किंतु इनके पीछे वह भावना नहीं रहती जो लड़कियों के नाम के साथ जुड़ी लगती है।

यों नामकरण का भी पूरा संस्कार है पर व्यवहार जगत सदैव ही प्रबल रहा है। यदि इस दृष्टि से खोजबीन की जाय तो कई नामों के पीछे कोई-न-कोई सार्थक भाव अवश्य मिलेगा, भले ही वह हमें हास्यास्पद अथवा अजूबा अनोखा लगे। लोकजीवन अपने ढंग से चलता है। वह कानून-कायदा, रीति-रिवाज तथा शास्त्र की मर्यादा में बन्धा रहकर भी अपने में पूरा स्वतंत्र तथा मनमर्जी का होता है पर वह समूह अथवा समाज की मान्यता लिए चलायमान होता है।

अब जब प्राचीन दौर नहीं रहा और सब ओर आधुनिकता का उत्साह और सामाजिक प्रतिष्ठा के मापदण्ड बदल गये हैं वहां अणचाही का आधुनिकीकरण होकर उसका रिफाइण्ड रूप अंतिम बाला नाम अवश्य ही हम सबको मोहित करने और सार्थकता देने वाला है।

विश्वविद्यालयों का नामकरण साहित्यकारों के नाम पर क्यों नहीं??

- डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर -

मेवाड़ साहित्य, संस्कृति और सभ्यता का पर्याय है। कला इसके जन्म में विद्यमान है। यहां लोकसाहित्य का अपार भंडार है। यह आदिवासियों का गढ़ है और सारे समाज को साथ लेकर चलता है। इसके पीछे साहित्यकार की भूमिका बड़ी ही महत्वपूर्ण है जो तटस्थ भाव से सारे समाज को अपने में जीता है और अपने साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। जहां विश्व को वरदान देने वाली मीरां का निकेतन हो वहां साहित्य की क्या कमी है! इन सबको देखते हुए यहां यूनिवर्सिटी भी अनेक हैं परन्तु किसी यूनिवर्सिटी का नाम साहित्यकार के नाम पर नहीं है।

जनार्दनराय नागर ने अपने प्रयास से कॉलेज से विश्वविद्यालय बनाने में सफलता प्राप्त की है। इसका सम्पूर्ण श्रेय उनको जाता है इसीलिए उसका नाम जनार्दनराय नागर डीम्ड यूनिवर्सिटी हो सका लेकिन ऐसा कोई विवि नहीं है जो साहित्यकार के नाम स्थापित किया गया हो जबकि भारतवर्ष में अनेक ऐसी यूनिवर्सिटी हैं जो वहां के साहित्यकार के नाम से जानी जाती हैं।

आश्चर्य तो इस बात का है कि विवि का नाम किसी साहित्यकार के नाम पर रखना तो दूर यहां किसी साहित्यकार को किसी विवि ने डी.लिट् की मानद उपाधि तक नहीं दी। मैंने दो बार श्री नंद चतुर्वेदी को डी.लिट् की मानद उपाधि देने के लिए न केवल कुलपति को लिखा अपितु उसकी प्रतिलिपि राज्यपाल को भेजते हुए उनका ध्यान आकृष्ट किया परन्तु उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ।

इससे यह बात स्पष्ट होती है कि यहां की सत्ता और समाज दोनों ही साहित्यकार की अनुपस्थिति को रेखांकित करना

चाहते हैं। मानद उपाधि देने से साहित्यकार ही नहीं, बल्कि वह विवि सम्मान पाता। मन में बार-बार यह प्रश्न उठता है, विवि इस ओर ध्यान क्यों नहीं देते? क्यों नहीं अपने साहित्यकार को स्थापित कर उसे वर्तमान तथा भावी पीढ़ी से जोड़ने के लिए उत्सुक होते हैं?

मैंने दक्षिण भारत की अनेक बार यात्राएं की हैं। कर्नाटक के हुगली और तमिलनाडु के कन्याकुमारी क्षेत्र में साहित्यकारों की आदमकद उन्नत मूर्तियां लगी हैं और निरन्तर उनके साहित्य का प्रचार होता है। कन्याकुमारी में पंक्तिबद्ध होकर अपने महान कवि की किताबें लोग खरीद रहे थे। मैंने जिज्ञासावश वहां के एक व्यक्ति से पूछा, ये लोग खास पढ़ेलिखे दिखाई नहीं देते हैं फिर साहित्य क्यों खरीद रहे हैं? वह बोला, इनमें अधिकांश अनपढ़ हैं। वे साहित्यकार का फोटो भी खरीद रहे हैं और अपने घर में जाकर पूजा के आले में लगायेंगे और साहित्य रखेंगे। जब बाहर से कोई आयेगा, वे कहेंगे हम पर साहित्या देवता का आशीर्वाद है।

कर्नाटक में जगह-जगह साहित्यकार की मूर्तियां और मंदिर भी हैं। वहां का समग्र समाज उनकी वर्षगांठ बड़ी धूमधाम से मनाता है। बकायदा प्रसाद भी बंटता है। उनमें अपने साहित्यकारों को लेकर बड़ा जोश, उत्साह और उमंग है। वहां साहित्यकारों को अपने समाज का अभिन्न अंग मानते हैं। उसी पर वे खुशहाल हैं। वहां के साहित्यकारों को न केवल मानद उपाधि से अलंकृत किया गया बल्कि उनके नाम पर स्कूल और कॉलेज भी स्थापित किये हैं। इससे लगता है कि वहां साहित्य समाज का दर्पण है।

यह बात अत्यंत दुख से कहनी पड़ रही है कि अपने प्रसिद्ध साहित्यकार के प्रति एक अदना साहित्यकार इसलिए आवाज उठा रहा है ताकि समाज भेदभाव से परे उठ साहित्यकार को अपनाकर समुन्नत समाज की ओर उन्मुख हो सके। मैं आशा करूंगा कि ऐसे साहित्यकारों को भी विवि मानद उपाधि देकर सम्मानित करे जो लोक की विरासत के पुरोधा के रूप में सर्व ओपमा लिए हैं।

जिस लोकसाहित्य का कोई लेखक नहीं है उसका सारा समाज लेखक और पाठक है। वह साहित्य समाज की धड़कनों में परिव्याप्त है। ऐसे लोकसाहित्य की अमर चेतना ही हमारे इतिहास को अमर बनाती है। मेरी समाज में यह साहित्यकार का नहीं अपितु अलिखित साहित्य का सम्मान है। इस पर यदि गंभीरतापूर्वक विचार किया गया तो हमारे समाज में जागृति की ऐसी नई चेतना स्थापित होगी।

शब्द रंजन कार्यालय में कवि-गोष्ठी

लोकप्रिय जनकवि माधव दरक जब भी उदयपुर आते हैं, मिलने का प्रसंग बना लेते हैं। यह उनकी सहृदय सौहार्द्र मैत्री का हिस्सा है। इस बार भी 2 जुलाई 2018 को शब्द रंजन कार्यालय

में उनसे हमारी आपसी याराना मिलनी होती रही लेकिन उस दौरान प्रसंग ऐसा बनता गया कि अन्त में वह मिलन एक सुखद कवि-गोष्ठी में ही परिणत हो गया। कब डेढ़ घण्टा निकल गया, पता ही नहीं चला।

मैं और तुक्तक उनसे अगजग की गपशप में खोये हुए थे कि इतने में ईटीवी राजस्थान के ब्यूरो चीफ कपिल श्रीमाली, जी मरूधरा के ब्यूरो चीफ डॉ. रवि शर्मा तथा विद्याभवन बी. एड. कॉलेज की डॉ. सरिता जैन भी हमसे मिलने आ पहुंचीं। कवि के रूप में तो माधवजी सबसे सुपरिचित ही थे पर उनसे यहां इस तरह मिलकर और उन्हें सुनकर सब विभोर हो गए।

माधवजी ने बड़े ही सहज भाव से बारी-बारी से एड़ो म्हारो राजस्थान, मायड़ थारो वो पूत कठै, कागला मत करजे नुकसान कविताएं तथा शिव दर्शन के कुछ पद्य सुनाये जो सबकी फरमाइश की और उनकी भी पसंदीदा कविताएं हैं। माधवजी की कविताओं के रसिक श्रोता कार्यालय से गुजरने वाले राहगीर भी बनते रहे। चाय वाले निर्भयसिंह देवड़ा ने भी चाय-सेवा के दौरान उन कविजी की कविताओं को सुन अपने जीवन को सार्थक कर दिया।

- म. भा.

शब्द के बिना

- हरमन चौहान -

शब्द पर मत जाओ बन्धु।
शब्द तो मायाजाल है,
शब्द तो रंजन है, अरथाऊ है।
एकबार उलझे तो ता-जिंदगी
उलझते ही रहना है, शब्द-ता-शब्द।
प्रगतिशील समझते हो
अपने को तो दोहराते क्यों हो
वही शब्द बार-बार?
यार! मैं भी परंपरावादी हूं
शब्द और भाषा भी परंपरावादी है।
इतना ही अपने को प्रगतिशील मानते हो
तो हर बार शब्द नये क्यों नहीं घड़ लेते?
जो भी बोलोगे भाषा बन जायेगी मगर
मूसे की भाषा मूसा ही समझेगा, खुदा नहीं।
शब्द अपने में वजन रखता है,
शब्द रंजन भी रखता है कोई मायना।
अणु सी शक्ति रखता है।
जब भी होता है विस्फोट,
तब देखो न अपना आयना?
विश्व में संहार हुआ है,
हाहाकार मचा है।
शब्द फिर भी वहीं रहा है,

केवल आदमी बदलता है।
भाषा या शब्द जब बदलते हैं तब
शब्द रंजन, खंजन हो जाता।
युग परिवर्तन होता है यही परंपरा है।
सृजन तब वाकई बन्धन हो जाता।
स्वांस लेना, जीना-मरना भी एक परंपरा है।
कौन प्रगतिवादी, कौन परंपरावादी?
तुम हो तो कुछ भी मत दोहराओ।
दोहराना परंपरा बन जाता है,
जैसे खाना, पहनना, चलना, मरना आदि।
शब्द जो भी हैं उन्हें स्वीकारो
तभी तो तुम विद्वान कहलाओगे।
आओ प्रगतिवाद के
वाद-विवाद से बचकर
हम केवल शब्द के अर्थ को पहचानें।
उसके भाव और अर्थ को जानो
क्रम से शब्द रखो भाषा स्वयं बनेगी।
शब्द का अस्तित्व है तो तुम, मैं, सभी हैं।
बिना शब्द सब व्यर्थ अनर्थ है।
कौन जानेगा बन्धु-
शब्द के बिना तुम्हारा नाम?
मैं शब्द रंजन हूं, पहचानो।

स्मृतियों के शिखर (56) : डॉ. महेन्द्र भानावत

पं. नागर जिन्होंने प्रेमचंद को अपना साहित्यिक पिता माना

पं जनार्दनराय नागर जिन्हें सब 'जनुभाई' कहते, की पहचान कई रूपों में रही। साहित्य, संस्कृति, शिक्षा, कला तथा राजनीति के क्षेत्र में वे निरन्तर हलचल में रहे। राजस्थान विद्यापीठ की स्थापना कर झाड़ोल-फलासिया जैसे ठेठ आदिवासी पिछड़े क्षेत्रों में प्रौढ़ शिक्षा की अलख जगाई। उदयपुर में श्रमजीवियों के पठनार्थ रात्रि-कॉलेज प्रारम्भ किया। प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों, पट्टे-परवानों तथा शिलालेखों के अध्ययन-संरक्षण के लिए साहित्य संस्थान का शुभारम्भ किया। इस संस्थान में रहकर मैंने भी सन् 1964 से 68 तक अपनी सेवाएं दीं। वहां से प्रकाशित 'शोध पत्रिका' का सम्पादन किया तब डॉ. मोतीलाल मेनारिया उसके निदेशक थे। वहां मेरे द्वारा संपादित महाराणा जवानसिंह लिखित पदों का संकलन 'ब्रजराज काव्य माधुरी' नाम से प्रकाशित हुआ। पदों की रचना महाराणा ने 'ब्रजराज' नाम से की।

जनुभाई ने दैनिक समाचारों के प्रति आम जनता को सजग रखने के लिए कोलपोल पर जनपद की स्थापना की। घर बैठों को पढ़ने के लिए मनचाही पुस्तकें सुलभ कराने हेतु चल पुस्तकालय खोला। ऐसे बहुत सारे वे अकल्पनीय कार्य किये जो आगे जाकर सबके लिए प्रेरक, आवश्यक और अनिवार्य मापदण्ड बने।

इससे सहज ही जनुभाई के विशाल व्यक्तित्व और श्रेष्ठ विचारक का अनुमान लगाया जा सकता है। आज तो उनके नाम से पूरा विश्वविद्यालय ही चल रहा है। पं. जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय में शिक्षा के अलावा और भी अनेक प्रवृत्तियां चल रही हैं। इसके कुलपति एस. एस. सारंगदेवोत हैं जो बड़ी सफलता के साथ अंगद के पैर जमे हुए हैं।

जनुभाई किसी एक मरजी के तसल्लीवान व्यक्तियों में से नहीं थे। अपनी विलक्षण प्रतिभा से वे नये-नये स्वप्नों की कल्पना में खोते हुए उन्हें प्रायोगिक रूप देते रहे। अपनी मोहक वाणी तथा भारतीय संस्कृति की अस्मिताजनित जादुई शब्दावली से वे सर्वत्र ही सब पर छाये रहे। कई यादगार समारोहों और सम्मेलनों में उन्होंने अनेक ख्यातनाम विभूतियों को उदयपुर में अपने यहां आमंत्रित कर उनका यथोचित बहुमान सम्मान किया। राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए वे प्राण-प्रण से जुटे रहे तो राजस्थानी की संवैधानिक मान्यता के लिए भी उनका संघर्ष जारी रहा।

राजस्थान साहित्य अकादमी की स्थापना का श्रेय भी जनुभाई की संघर्षजनित प्रेरणा का सुफल रहा। उन्होंने राजनीति और साहित्य के दोनों क्षेत्रों में दो घोड़ों की लगाम थामे अपने को श्रीमान बनाये रखा किन्तु उनका वैसा आकलन नहीं होने पर उन्हें निराशा ही हाथ लगी। स्वाधीनता के बाद सत्ता और प्रतिष्ठा के लालच ने जनुभाई को भी कम मोहित नहीं किया।

जनुभाई को मैंने कई रूपों में देखा। अपने कार्यकर्त्ताओं पर दहाड़ते अपना हाड़ हिलाते भी देखा तो उनकी प्रशंसा के कसीदों की रंगरेजी बुनावट करते भी खूब देखा।

एक सत्ताधीश की तरह अहं के नशे की चिलम फूंकते भी मैंने उनकी फड़फड़ाहट देखी तो एक सहृदय सहज इंसान की तरह मौका आने पर अपने द्वारा किये गये कार्य-व्यापारों से खिन्न व्यक्तियों से पश्चाताप करते, क्षमा-याचना की सुमंगल प्रभाती का पत्र लिखते भी देखा। एक नाट्याभिनेता का रंग जहां उन पर हावी रहता वहीं वे एक पारदर्शी सहृदयता के वशीभूत हो तनिक से व्यक्ति को भी अपनी अच्छी बड़ी भुजा का पार्श्व देने में पीछे नहीं रहते।

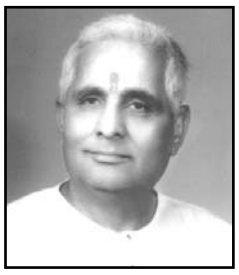

मैंने जब भी जनुभाई से भेंट की उनके अमल कांटे स्थित निवास पर ही की। यह भेंट उनसे मात्र मिलने की नहीं, उनसे बातचीत कर लिखने का प्रयोजन लिये ही अधिक रही। यह भी उल्लेखनीय पक्ष ही रहा कि जब-जब भी उनके घर किसी विशिष्ट, अति विशिष्ट साहित्यकार का समागम हुआ, उन्होंने मुझे बुलाकर उनका स्नेहशील सान्निध्य दिया। जैनेन्द्रजी, अमृतराय तथा अज्ञेय जैसे विज्ञों से मिलने की याद मुझसे शायद ही कभी विस्मृत हो सकेगी।

जनुभाई ने एक साक्षात्कार में निराशा की जंभाई लेते कभी मुझे कहा था कि इतना खासा सृजन करने के बाद भी साहित्य में उनकी प्रतिष्ठा का वह मुकाम नहीं बन पाया। अब जब उनके साप्ताहिक 'जन मंगल' के माध्यम से निरन्तर उनके गद्य गीत पढ़ने को मिल रहे हैं और उनके विभिन्न खण्डों में लिखे वृहदाकार 'शंकराचार्य' नामक उपन्यास की चर्चा है तब वे कैसा महसूस कर रहे हैं? ऐसे ही कुछ सवालों की धाक लिये मैं उनके निवास पहुंच गया। उन्होंने बड़े उत्सुकतापूर्ण उल्लास के साथ मुझे अपने कक्ष में बिठाया। मैंने प्रश्न पूछना शुरू किया।

प्रश्न - शंकराचार्य जैसी साहित्यिक कृति के प्रकाशन के बाद आप कैसा महसूस कर रहे हैं?

उत्तर - सात हजार पृष्ठों के शंकराचार्य के प्रणयन में साढ़ा तेरह वर्ष लगे। उदयपुर में जिन महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना हुई उनमें चौथा शंकराचार्य है।

प्रश्न - शेष तीन कौन-कौन से ग्रंथ हैं?

उत्तर - पहला कविराजा श्यामलदास लिखित वीर विनोद, दूसरा कर्नल टॉड लिखित एंटीक्वीटीज ऑफ राजस्थान, और तीसरा स्वामी विवेकानन्द लिखित सत्यार्थ प्रकाश।

प्रश्न - शंकराचार्य के लेखन की क्या पीठिका रही?

उत्तर - यह ईश्वरीय प्रेरणा से लिखा गया। शंकराचार्य में संघर्ष की जो चेतना है वह मुझे भीतर में चरम तक ले गई। अन्त का परिणाम जागृति से होता है।

इसे लिखने के दौरान विश्वभारती से एक संन्यासी आये जिन्होंने मुझे कहा- 'लिखते रहना, यह तुमसे लिखवाया जा रहा है।' डॉ. दौलतसिंह कोठारी ने तो नियमित रूप से इसका एक-एक पन्ना मुझसे सुना है। मेरे जीवन में जो घटित हुआ उसे मैं किसी को कह भी नहीं सकता किन्तु कहे बिना रह भी नहीं सकता।

प्रश्न - राजस्थान साहित्य अकादमी के आप संस्थापक अध्यक्ष हैं सो कैसे? इसकी स्थापना तो राज्य सरकार द्वारा की गई है।

उत्तर - अकादमी की स्थापना मेरी संघर्षपूर्ण कोशिशों से हुई। लम्बी जद्दोजहद के बाद मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया से मैंने राजस्थान के साहित्यकारों की चैतन्यमय अस्मिता के लिए अकादमी की मांग की। इससे पूर्व सन् 1941 में मैंने प्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें जमनालाल बजाज तथा हरिभाऊ उपाध्याय को बुलाया। उन पर मेवाड़ में प्रवेश पर प्रतिबन्ध था। मैंने महाराणा भूपालसिंहजी से अर्ज कर प्रतिबन्ध खारिज करवाया। इसी सम्मेलन में पं. सोहनलाल द्विवेदी ने प्रथम बार अपनी कविताओं का पाठ किया।

इसी प्रकार मैं दूसरे सम्मेलन का आयोजन करना चाहता था लेकिन लोगों ने असहयोग किया तब 1958 में मेरा आग्रह स्वीकार कर सुखाड़ियाजी ने मुझे अकादमी सौंपी। तब राजस्थान के किसी भूभाग में अन्य कोई अकादमी नहीं थी। साहित्यकारों के लिए अकादमी का मिलना वट-वृक्ष तो नहीं कहता पर आम्र-वृक्ष तो है ही जिसकी पूरे देश में प्रतिष्ठा बनी है। मैंने वहां 15 साल तक बतौर अध्यक्ष काम किया। इसमें सर्वप्रथम मैंने राजस्थानी का और फिर उर्दू का विभाग खोला और फिर अलग से संस्कृत अकादमी बनी। आज तो सब ओर अकादमियां ही जोशीली बनी हुई हैं।

प्रश्न - प्रेमचन्द को आप किस रूप में लेते हैं?

उत्तर - प्रेमचन्द मेरे साहित्यिक पिता हैं। उनसे मैं मिला तो बाद में किन्तु 1921 में उनसे मेरा सम्पर्क-सम्बन्ध बना। उन्होंने 'रंगभूमि' लिखा तो मैंने भी उसी तर्ज पर 'मातृभूमि' उपन्यास लिखा। इसे मेवाड़ सरकार ने जब्त कर जलवा दिया। इन्टर पढ़ते जब 1933-34 में मैं बनारस गया तो वहां प्रतिदिन प्रेमचंदजी से मिलने जाता। वे कई विषयों पर चर्चा करते। मेरी अन्त:चेतना को जगाने में उनका भारी योगदान रहा।

प्रश्न - हिन्दी को आप किस रूप में लेते हैं?

उत्तर - अंग्रेजी हमारी नब्ज में पैठती चली गई है सो हम हिन्दी की बाजी हार गये हैं। इसका कारण हम स्वयं हैं। हिन्दी समर्थकों ने अ-हिन्दी भारत में अपनी भाषाओं की अस्मिता को लेकर संशय के बीज बो दिये हैं। इसलिए हिन्दी को लेकर कभी-कभी मुझे रोना आता है। यदि हम एक राष्ट्र मानते हैं तो एक राष्ट्रभाषा जरूरी है। राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन के साथ हमने 1945 में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन किया। वे मुझे अपना पुत्र मानते थे। कुछ भी हो, हम तो हिन्दी को राष्ट्रभाषा ही मानते हैं।

प्रश्न - राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता दिलाने के लिए किये जा रहे आंदोलन.. ..

उत्तर - (बीच में ही) यहां मारवाड़ी बोलने वालों का प्राबल्य है। जितनी बोलियां यहां हैं उनका समन्वय कर राजस्थानी का स्वरूप खड़ा करना जरूरी है। गुजरात में कच्छी, सोरठी, उत्तरी गुजराती आदि छह भाषाओं का समन्वय कर आधुनिक गुजराती का रूप दिया गया। राजस्थानी में भी सभी बोलियों का एक मानक स्वरूप बनाना होगा। ऐसा कोई लेखक भी नहीं जो राजस्थान की जनता के मन पर प्रभाव डाल सके। मारवाड़ी को राजस्थानी भाषा मानना अपूर्ण सत्य है।

प्रश्न - आपने राजनीतिक लेखन और स्वतंत्र लेखन दोनों में अपनी खूबी दी है। किस लेखन को आप अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं?

उत्तर - राजनीतिक लेखन आंदोलन और सत्ता से जुड़ाव रखता है। शुद्ध या स्वतंत्र लेखन मैं योजनापूर्वक नहीं करता। लिखते वक्त मैं अपने पात्रों के नियंत्रण में रहता हूं। वे जिधर ले जाते हैं, मैं उधर चला जाता हूं। मेरे लिखने का ध्येय मनुष्य की आराधना है। इस धरा को जागृत मनुष्य की आवश्यकता है, देवता की नहीं।

प्रश्न - कई बार मैंने देखा, बड़े-बड़े समारोहों तक में मंचासीन रहकर भी आप निरन्तर लेखन-मग्न रहते हैं।

उत्तर - यह सच है कि मैं लिखे बिना नहीं रह सकता। मेरी धारा प्रवाह वाणी ही नहीं, लेखनी भी है जो रूक नहीं सकती। इसे मैं सरस्वती का पावन प्रसाद मानता हूं। प्रेमचन्द के बाद आचार्य चतुरसेन शास्त्री और महाकवि जयशंकर प्रसाद ने मुझे प्रभावित किया। मैं जन्मजात भारतीय हूं।

प्रश्न - राजनीति में आपके प्रवेश ने क्या आपको अच्छा लेखक बनने में बाधा पहुंचाई?

उत्तर - सच तो यह है कि मैं राजनीति का व्यक्ति हूं ही नहीं। मजबूरी से, विद्यापीठ को बचाने के लिए मुझे राजनीति की शरण लेनी पड़ी। तत्कालीन सत्ताधीशों ने 1949 से ही विद्यापीठ पर आक्रमण शुरू कर दिये। उसे बचाने के लिए 1965 तक मेरा संघर्ष जारी रहा।

प्रश्न - आपने विद्यापीठ को एक जनतांत्रिक शिलान्यास का स्वरूप देना चाहा। क्या इसमें आपको सफलता मिली?

उत्तर - यह सच है कि जनतंत्र की अवमानना हो रही है। राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय बनने के बाद विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियमानुसार चलता है। ऐसे में जनतंत्रीय शिलान्यास के अनुशासन में विद्यापीठ के कार्यकर्त्ता नहीं चलना चाहते।

सच यह भी है कि अब हमारा तप क्षीण हो गया है। सार्वजनिक संस्थाओं की अब आवश्यकता ही नहीं है। अब देश-काल बदल गया है। हमारा रात्रि कॉलेज अब डे-कॉलेज में बदल गया है। पत्राचार पाठ्यक्रम और खुले विश्वविद्यालय शुरू हो गये हैं। प्रौढ़ शिक्षा के मामले में 1937 से हमारा काम पाओनियर्स रहा लेकिन सरकार ने हमारे इस कार्य को बगावत समझा और हमारा दमन किया। सब समय-समय की बात है।

उम्र के इस आखिरी पड़ाव में जबर्दस्त अनुभव तो यह रहा कि जितनी हमारे साथ बेइन्साफी, दमन और विरोध हुआ, हमारी चमक उतनी ही उज्वला बन वन्देमातरम् का सन्देश देती रही। ठीक ही है, संघर्ष की शुचिता ही आदमी को प्राणवान बनाकर पूर्ण पौरुष देती है।

आज जब जनुभाई हमारे बीच नहीं हैं तो वह साहित्यिक हलचल, सांस्कृतिक राईतादारी, राजनीतिक रगड़-झगड़ सब सुस्तीवाड़े में हैं। उदयपुर में ही नहीं, पूरे प्रांत-प्रदेश में जहां भी कुछ अनभावन होता वे सबसे पहले चेतते। अपनी विद्यापीठी फौज में हुंकार भरते। दहाड़ देते। यह दहाड़ उनकी वाणी में ही नहीं, लेखनी में भी कंपन देती। सच तो यह है कि वे कभी सोये ही नहीं। जब तक जिये एक शेर की तरह जिये।

श्री मेहता द्वारा फिलाडेल्फिया में प्रबंधन कौशल कार्यशाला में भागीदारी

उदयपुर। बड़ीसादड़ी निवासी जे. के. पेपर लिमिटेड के प्रेसीडेंट ए. एस. मेहता ने 28 मई से 29 जून तक अमेरिका में पेन्सिलगेरिया यूनिवर्सिटी फिलाडेल्फिया में आयोजित प्रबंधन कौशल कार्यशाला में भाग लिया। यह विश्व विख्यात वार्टन बिजनेस स्कूल द्वारा पांच सप्ताह का कार्यक्रम होता है। इस कार्यक्रम में 19 देशों के 46 विभिन्न उद्योगों के नामचीन प्रबंधकों ने हिस्सा लिया।

इस दौरान ख्यातिप्राप्त प्राध्यापकों तथा अनुभव निष्णात व्यक्तियों द्वारा विभिन्न विषयों पर अनुसंधान आधारित प्रबंधन की अधुनातन विधाओं तथा विश्व में हो रही प्रबंधन पटुता विषयक जानकारी साझा की गई। इसमें सम्मिलित सभी 46 प्रतिभागियों ने भी अपने प्रबंधकीय अनुभव कौशल द्वारा विश्व में हो रहे अधुनातन उद्योगों के बारे में वैचारिक मंथन किया। समापन समारोह में मेहता की 35 वर्षीय दीर्घकालीन कौशलजनित अनुपम उपलब्धियों के कारण डीन ऑफ वार्टन एक्जीक्यूटीव एज्यूकेशन माइकल उसीम ने एक्सीलेंस उपाधि से सम्मानित किया।

एशिया पेसिफिक में पहले स्थान पर रहे कमलेश

उदयपुर। अपनी अद्भुत केश विन्यास तकनीक से दुनियाभर के विशेषज्ञों को अचंभित करते हुए राजस्थान उदयपुर के कमलेश सेन (चेम्पियन) पेरिस में हुई ओएमसी ग्लोबल हेयर स्टाइलिस्ट, 2018 ऑनलाइन हेयर कट फोटोग्राफी

प्रतियोगिता के जेंटस फेड हेयर कट वर्ग में न सिर्फ टॉप-5 में जगह बना देश का नाम रोशन किया बल्कि पूरे एशिया पेसिफिक क्षेत्र में पहला स्थान प्राप्त किया है। गुरूवार को विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी यथा जमनेश सेन, शंभूलाल सेन, अशोक पालीवाल, मंजू शर्मा, आशा कालरा, नंदा भाटिया एवं दुर्गेश सेन ने एशिया पेसिफिक फेड हेयर कट विजेता कमलेश सेन का सम्मान किया।

इस अवसर पर आयोजित प्रेसवार्ता में कमलेश सेन ने बताया कि इस प्रतियोगिता में विश्व के कई देशों के दिग्गज हेयर स्टाइलिस्ट ने हिस्सा लिया था जिनमें से विशिष्ट प्रतिभा के धनी कमलेश सेन को ओवरऑल पांचवी पोजीशन मिली। सबसे खास बात यह रही कि भारत ही नहीं पूरे एशिया पेसिफिक में यह खास मुकाम कमलेश सेन ने ही हासिल किया। इस प्रतियोगिता में विश्व के लगभग 115 नामचीन हेयर स्टाइलिस्ट्स ने हिस्सा लिया जिनके बीच हर स्तर पर बहुत की कड़ी प्रतिस्पर्धा देखने को मिली। अपनी सफलता से बेहद खुश कमलेश सेन ने बताया कि इस विश्व स्तरीय प्रतिष्ठित स्पर्धा में उदयपुर से उनके साथ अनिल सेन, श्वेताशा पालीवाल, पुष्कर सेन और बेंगलूरू से अली हसन आदि ने भी अलग-अलग श्रेणियों मे हिस्सा लेकर अपने हुनर का कमाल दिखाया।

हेल्थकेयर में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस सॉल्यूशन

उदयपुर। अनेक लोगों की आवश्यकताएं और सिर्फ कुछ लोगों के लिए उपलब्ध सेवाओं के अंतर को भरने के लिए स्वास्थ्य देखभाल में ऐसे तकनीकी समाधानों का उपयोग शुरू हुआ है, जिनमें बड़ी आबादी की जरूरतों को पूरा करने की क्षमता है। भारत में प्रति 10,000 की आबादी पर सिर्फ 4.8 डॉक्टर हैं। हालांकि वर्ष 2030 तक प्रति 10,000 लोगों के लिए डॉक्टरों की संख्या 6.9 तक पहुंचने की उम्मीद है, पर हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा अनुशंसित न्यूनतम डॉक्टर-मरीज अनुपात 1:1000 है।

वाधवानी इंस्टिट्यूट फॉर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (वाधवानी एआई) के सीईओ डॉ पी आनंदन ने कहा कि राजस्थान स्थित एमहैल्थ सेवा प्रदाता और मेरापेशेंट ऐप के संस्थापक और अध्यक्ष मनीष मेहता ने कहा कि स्वास्थ्य भारत में राज्यों का मामला है। आंध्रप्रदेश, तेलांगना, महाराष्ट्र और नई दिल्ली जैसे राज्यों ने बीमारियों का निदान और महत्वपूर्ण देखभाल की निगरानी के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग करना शुरू कर दिया है। इसके अलावा, राजस्थान के कुछ जिलों में कृषि क्षेत्र में एआई का इस्तेमाल हो रहा हैं। चूंकि भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की सफलता के लिए, तकनीक को अमल में लाना महत्वपूर्ण है, इसलिए समय-समय पर नई प्रौद्योगिकियों को लागू करने के लिए डेटा एकत्र करने का काम करने वाले स्टार्टअप को बढ़ावा देने का यह सही समय है। भारत में मोबाइल स्वास्थ्य ऐप्स की बढ़ती संख्या के साथ, एमहैल्थ को अपनाने की आज विशेष रूप से जरूरत है, खासतौर पर ग्रामीण भारत में जहां योग्य और कुशल स्वास्थ्य पेशेवरों की कमी है।

लवली बाबेल बनी उदयपुर स्टार शेफ 2018

उदयपुर। लेकसिटी की गृहिणियां ना सिर्फ अपने हाथों के जादूई स्वाद से अपने परिजनों बल्कि स्वाद और व्यंजनों को प्रस्तुत करने क्षेत्र में महारत हांसिल रखने वाले सेलिब्रिटी शेफ का भी दिल जीतने का हौंसला और कला रखती है। यही साबित हुआ शौर्यगढ़ रिसोर्ट और स्पा द्वारा आयोजित फूड फेस्टिवल में, जिसमें प्रतियोगिता जीतने के बाद अब लवली बाबेल की पहचान स्टार शेफ के रूप में है। अपनी रेसिपी, स्वाद और प्रस्तुती से व्यंजनो के उस्तादों को अचरज कर खिताब जीतने में उदयपुर के हॉटल्स के शेफ भी पीछे नहीं हैं। यंग शेफ चेलेंज में एचआरएच ग्रुप ऑफ हॉटल्स के शेफ विनीता त्यागी एवं शेफ दीपक राणा विजेता रहे। स्टार शेफ प्रतियोगिता में अलिशा सियाल और राजवीरसिंह राणावत रनरअप रहे। उदयपुर यंग शेफ के रनरअप रेडिसन उदयपुर के रोहन बोथियाल एवं महेश्वर सिंह और होटल जयसिहंगढ़ के सोहन लाल रेबारी और सोनथ रेबारी रहे। मास्टर बार टेण्डर चैलेंज 2018 के विजेता उदयविलास के विराज सुग्गा और रेडिसन उदयपुर के कुणाल गुप्ता रनरअप रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि ग्रुप पब्लिशिंग डायरेक्टर आईटीपी मीडिया ग्रुप इण्डिया बिभोर श्रीवास्तव, सेलिब्रिटी शेफ गौतम महर्षि, अमृता रायचंद, वरूण ईनामदार, सुधीर पाई, शतभी बासु, धनश्री पुनेकर एवं अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया। मैनेजर रूपम सरकार ने बताया कि फूड फेस्टिवल के समापन समारोह में शेफ गेव देसाई और मुंबई की शीरीन बाटलीवाला को लाइफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजा गया जिन्हें इस क्षेत्र में 40 वर्षों से भी अधिक का अनुभव है। फूड फेस्टिवल प्रतियोगिता में विजेता को शौर्यगढ रिसोर्ट की ओर से 21,000 रूपये का चैक एवं रनरअप को 11,000 रूपये का चैक, शील्ड व सर्टिफिकेट अतिथियों द्वारा प्रदान किये गये। उदयपुर स्टार शैफ में 48 प्रतिभागियों में से टॉप 10 को चुना गया वहीं यंग शैफ चैलेन्ज में उदयपुर की 10 प्रमुख होटल्स के शैफ ने भाग लिया। विजेताओं के साथ ही अन्य प्रतिभागियों को भी शील्ड व सर्टिफिकेट से सम्मानित किया गया।

इससे पूर्व फूड फेस्टिवल के अंतिम दिन दोपहर में वर्कशाप में शेफ अमृता रायचंद ने कम्फर्ट फूड और चिल्ड्रन फ्रेण्डली पोषक आहार और व्यंजन बना कर टीप्स दिये। शेफ गौतम महर्षि ने इण्डियन कुजाईन और घर में आसानी से बनाए जा सकने वाले व्यंजनों को कम्फर्ट फूड वर्कशॉप में उदयपुरराईट्स को सरल तरीके से गैस चूल्हे और सिगड़ी पर स्वादिष्ट भोजन एवं व्यंजन बनाने के गुर सिखाये।

वंडर सीमेंट राज्य स्तरीय शिक्षा भूषण पुरस्कार से सम्मानित

उदयपुर। वंडर सीमेंट लि. को 24वें भामाशाह सम्मान समारोह 2018 में शिक्षा के क्षेत्र में किये गये उल्लेखनीय योगदान हेतु राजस्थान विधानसभाध्यक्ष कैलाश मेघवाल, शिक्षा राज्यमंत्री वासुदेव देवनानी द्वारा राज्य स्तरीय शिक्षा भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

वंडर सीमेंट के उपाध्यक्ष, वाणिज्य नितिन जैन ने बताया कि कम्पनी द्वारा परियोजना क्षेत्र के आस-पास के गाँवों में सामुदायिक विकास के कार्यों में प्राथमिकता से योगदान किया जाता रहा है तथा राजकीय विद्यालयों के विकास हेतु परियोजना क्षेत्र के अलावा भी जिले के अन्य क्षेत्रों में आवश्यकता अनुसार विकास के कार्य करवाये गये हैं। वंडर सीमेंट लि. को वर्ष 2013, 2015, 2016 एवं 2017 में भी राजस्थान सरकार द्वारा राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है। कम्पनी द्वारा शैक्षणिक विकास के अन्तर्गत निम्बाहेड़ा क्षेत्र के विद्यालयों में आधारभूत ढाँचागत निर्माण, प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान एवं साइकिल वितरण, विद्यालयों में स्वच्छता आधारित गतिविधियों का संचालन, बालिका शौचालय युनिटों का निर्माण, पेयजल सुविधा एवं मुख्यमंत्री विद्यादान कोष में सहयोग सहित सहशैक्षणिक गतिविधियों में सहयोग हेतु राज्य सरकार द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया है। वर्तमान में निम्बाहेड़ा के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर राजकीय विद्यालयों में बेहतर प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं को सम्मानित कर साइकिल प्रदान की जायेगी तथा विद्यालयों को विकास के लिये सहयोग प्रदान किया जायेगा।

शैल्बी हॉस्पिटल के नये सेंटर की शुरूआत

उदयपुर। पूरे भारत में मल्टी-स्पेशेलिटी अस्पतालों की चेन का संचालन करने वाले शैल्बी हॉस्पिटल ने सेंटर फॉर लिवर डीज़ीज़ एंड ट्रांसप्लांट

(सीएलडीटी) की सुविधा एसजी हाइवे, अहमदाबाद में शुरू की है। हॉस्पिटल ने अब सभी प्रकार के लिवर ट्रांसप्लांट जैसे डिसीस्ड डोनर लिवर ट्रांसप्लांट, लिविंग डोनर लिवर ट्रांसप्लांट, बच्चों या बड़ों के लिए, ईलेक्टिव या एमर्जेंसी ट्रांसप्लांट में विशेषज्ञता हासिल की है। हाल ही में शैल्बी की एक विशेषज्ञ टीम ने भारत में सबसे बुजुर्ग व्यक्ति का लिवर प्रत्यारोपण किया। सूरत के 80 वर्षीय ब्रेन-डेड डोनर ने अहमदाबाद में एक लिवर पेशेन्ट जो क्रिटिकल स्टेज में था उसे जीवनदान दिया। ग्रीन कॉरिडॉर से लिवर को अहमदाबाद लाया गया। वहीं दूसरी तरफ, उदयपुर के कल्याणसिंह का सेंटर में एक सफल लिविंग डोनर लिवर ट्रांसप्लांट किया गया। सर्जरी डॉ आनंद के खखार, डॉ. विनय कुमारन के साथ टीम सदस्य डॉ. भविन वासवड़ा और डॉ. हार्दिक पटेल द्वारा की गई। डॉ आनंद के खखार ने कहा कि पहले जिन मरीज़ों को लिवर प्रत्यारोपण की आवश्यकता होती थी, उन्हें मुंबई, दिल्ली या चेन्नई में जाना पड़ता था। हेल्थकेयर डिलीवरी में इस अंतर को कम करने के लिए, शैल्बी हॉस्पिटल ने अहमदाबाद में लिवर प्रत्यारोपण की सुविधा शुरू की। आने वाले समय में जयपुर में भी ऐसी सुविधा शुरू की जायेगी।

कैम्पस प्लेसमेन्ट में मिले 1868 जॉब ऑफर

उदयपुर। एक अग्रणी बहु-आयामी युनिवर्सिटी यूपीईएस ने अकादमिक वर्ष 2017-18 में कैम्पस प्लेसमेन्ट में शानदार रिकॉर्ड बनाया है। साल के दौरान युनिवर्सिटी के 1789 छात्रों को 1868 जॉब ऑफर मिले हैं। प्लेसमेन्ट का ऑप्शन चुनने वाले 93 फीसदी छात्रों को इस साल 400 से ज़्यादा कंपनियों में जॉब मिले हैं। इनमें से 56 फीसदी कंपनियां पहली बार यूपीईएस के साथ जुड़ी हैं।

अल्का मदान, डायरेक्टर-कोरपोरेट रिलेशन्स, यूपीईएस ने कहा कि यूपीईएस ने लगातर तीसरे साल 90 फीसदी से ज़्यादा प्लेसमेन्ट का रिकॉर्ड बनाया है। जिस तरह से इंडस्ट्री के जाने माने संगठन यूपीईएस के छात्रों को जॉब दे रहे हैं, उससे साफ है कि यूपीईएस अपने छात्रों को इंडस्ट्री के ज़रूरतों के अनुसार प्रोफेशनल्स के रूप में तैयार कर रहा है।

ये ग्रेजुएट यूपीईएस के पांच स्कूलों से हैं- स्कूल ऑफ कम्प्यूटर साइन्सेज़, स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग, स्कूल ऑफ लॉ, स्कूल ऑफ बिज़नेस और स्कूल ऑफ डिज़ाइन। यूपीईएस के ग्रेजुएट छात्रों को जॉब देने वाली 400 से ज़्यादा कंपनियों में अधिकतर नामचीन कंपनियां हैं।

विक्ट्री समारोह में शब्दांक भानावत एवं परिवार को सम्मानित करते एनटीएस (नितिन सोहाने) तथा ट्राईबल इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च सेंटर के गितेशश्री मालवीया।

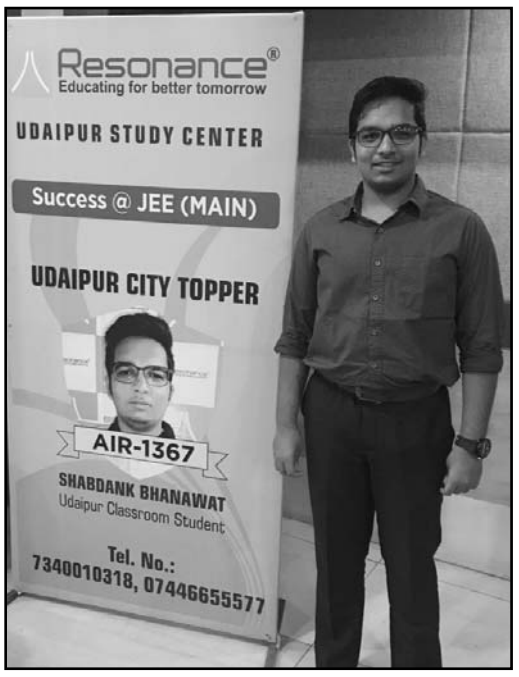

उदयपुर में 30 जून को रेजोनेंस कोचिंग इंस्टीट्यूट के विक्ट्री समारोह में लगी स्टेंडी के साथ शब्दांक भानावत

शान्तिलाल नलवाया नहीं रहे

उदयपुर के महाराणा भूपाल सार्वजनिक चिकित्सालय से मेल नर्स प्रथम ग्रेड से सेवानिवृत्त श्री शान्तिलाल नलवाया का गत दिनों निधन हो गया। कानोड़ निवारी श्री नलवाया ने अपने जन्मस्थान में आदिनाथ पशु रक्षा संस्थान की संस्थापना की। सन् 1987-88 में वे कानोड़ मित्र मण्डल के अध्यक्ष रहे। श्री रोशनलाल कंठालिया ने बताया कि कानोड़ से 1954 में कंपोडर की ट्रेनिंग के लिए प्रथम बार इन्दौर जाने वालों में उनके साथ नलवाया भी थे। उन्होंने अपनी योग्यता से नर्सिंग क्षेत्र में बड़ा नाम किया। वे कई सेवाभावी संस्थाओं से जुड़े रहे।

अंदर राजा आवियौ

(1)
आभै चढ़ी अषाढ़ में, छाई घेर घुमार।
आप पसीजी काळजै, देख जेठ री मार।।
(2)
गरज गाजि संदेसड़ौ, दीधौ गांव गुवाड़।
अंदर राजा आवियौ, घुड़ी चढ़ी कर आज।।
(3)
काळी भूरी बादळी, बींज सुनैरी कोर।
शरमायी सिणगार करि, मुखड़ै चून्दड़ ओढ़।।
(4)
धरा हरखती देख नै, चढ़ियौ हियै उमाव।
नद नाळा सागर भर'र, भरिया झील तलाब।।
(5)
सावण लगतां बादळी, जौबन रौ झलकाव।
नदियां बहै उतावळी, समद मिलण रै चाव।।
(6)
सुवरण तजि सुवरण गया, बसिया पिउ परदेस।
सुवरण तो मिलियो नहीं, रुपै हो गया केस।।
(7)
उमड़-घुमड़ नै बादळी, दीजै पिउ संदेश।
सावण सूनौ बीतसी, कांई छे परदेस।।
(8)
दाझी देह पपीवड़ा, मत थूं लूण लगाय।
थांरा पिउ रा बोल ई, धण धधकावै लाय।।
(9)
जां देशां साजण बसै, बरस बादळी जाय।
धीमी-धीमी गाज नै, व्हांनै सुरति कराय।।
(10)
झिरमिर-झिरमिर बरसजै, सुपनौ जोता जोय।
जगतां गाजी दमकजै, सैज कटारी होय।।

-भैरूसिंह राव 'क्रान्ति'

पुरस्कारों की घोषणा

उदयपुर। स्वतंत्रता सैनानी ओंकारलाल शास्त्री प्रतियोगिता 2018 के पुरस्कारों की घोषणा की गई है। सलिला संस्था, सलूम्बर द्वारा आयोजित प्रतियोगिता इस वर्ष बाल साहित्य की यात्रा वृतांत विधा में आयोजित की गई जिसमें 45 रचनाकारों की 63 प्रविष्टियां प्राप्त हुई। इसमें प्रथम बीकानेर की ईजी. आशा शर्मा, द्वितीय जयपुर के प्रबोधकुमार गोविल एवं भोपाल के अनिल अग्रवाल तथा तृतीय जोधपुर की संगीता सेठी, व भीलवाड़ा के डॉ जमनालाल बाहेती रहे।

संस्था की अध्यक्ष डॉ. विमला भंडारी ने बताया कि प्रतियोगिता के पुरस्कार 7-8 अक्टूबर को आयोजित होने वाले राष्ट्रीय बाल साहित्यकार सम्मेलन में प्रदान किए जाएंगे। इस अवसर पर संतोषकुमार सिंह मथुरा, डॉ. शील कौशिक सिरसा, डॉ कृष्णलता यादव गुरुग्राम, मानसी शर्मा, हनुमानगढ़, कीर्ति गांधी दुर्ग, अनिल जायसवाल नई दिल्ली, कविता वर्मा इंदौर, किशोर श्रीवास्तव नई दिल्ली, रजनीकांत शुक्ल गाजियाबाद, डॉ. अनिता जैन उदयपुर व डॉ अजय जनमेजय, बिजनोर को श्रेष्ठ यात्रा वृतांत के लिए पुरस्कृत किया जाएगा।

सक्का ने बनाया स्वर्ण रिकॉर्ड

उदयपुर के सूक्ष्म स्वर्ण कलाकृतियों के अंतर्राष्ट्रीय स्वर्णशिल्पी इकबाल सक्का ने सोने से भारत में लुप्त होती हुई प्राचीन संस्कृति के प्रतीक पारम्परिक मिट्टी से बने अनेक पात्र जो कभी हर घर में प्रचलन में थे किन्तु आज वे संग्रहालयों की शोभा बने हुए हैं। सक्का ने लुप्त एवं गुम होती हुई प्राचीन धरोहर को मिट्टी की जगह सोने से बनाकर वर्ल्ड रिकॉर्ड बुक में दावा पेश करने के साथ ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर अनुरोध किया है कि उनके द्वारा निर्मित स्वर्ण

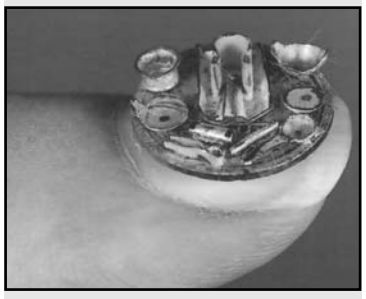

की इन अति सूक्ष्म कलाकृतियों को भारत सरकार के नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय कला संग्रहालय में प्रदर्शन के लिए रखा जाए।

सक्का ने बताया कि उन्होंने जो सूक्ष्म स्वर्ण पात्र बनाये हैं उनमें प्रत्येक दो-दो मिलीमीटर के हैं। यथा- चूल्हा, कड़ाही, चकला, बेलन, तपेली, फूकनी, चिमटा, चम्मच एवं तवा। चूल्हे में बकायदा लकड़ी जलाकर कड़ाही में दाल के दो दाने पकाए भी जा सकते हैं। भारतीय रसोईघर में काम में आने वाली इन 9 कलाकृतियों का वजन मात्र 500 मिलीग्राम अर्थात् आधा ग्राम सोना है।

डॉ. भानावत को कन्हैयालाल सेठिया सम्मान

उदयपुर। साहित्य, संस्कृति एवं कला के क्षेत्र में अपरिमित तथा अति उल्लेखनीय योगदान के फलस्वरूप प्रसिद्ध लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत को सुप्रतिष्ठित कन्हैयालाल सेठिया सम्मान से नवाजा जाएगा। कोलकाता के विचार मंच के सचिव सुविज्ञ समाजसेवी सरदारमल कांकरिया ने बताया कि 16 दिसम्बर 2018 को वहां के ज्ञानमंच पर आयोजित एक भव्य समारोह में डॉ. भानावत को इस सम्मान के अन्तर्गत इक्यावन हजार रूपयों की सम्मान राशि, स्मृति चिन्ह एवं सम्मान पत्र प्रदान किया जाएगा।

डॉ. भानावत उदयपुर के सुखाड़िया विश्वविद्यालय से पहले बैच के पीएच.डी. धारक हैं जिन्होंने राजस्थानी लोकनाट्य परंपरा में मेवाड़ का गवरी नाट्य और उसका साहित्य विषय पर सन् 1968 में यह उपाधि प्राप्त की।

उल्लेखनीय है कि डॉ. भानावत की लोकसाहित्य, संस्कृति एवं कला विषयक एक सौ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनके द्वारा संपादित रंगायन, लोककला, शोध पत्रिका, पीछोला, रंगयोग तथा ट्राईब नामक पत्रिकाएं शोधार्थियों के लिए बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई हैं। डॉ. भानावत ने लंबे समय तक मुंबई के जनसत्ता, इंदौर के चौथा संसार, जोधपुर के जलते दीप, उदयपुर के दैनिक भास्कर तथा जय राजस्थान में स्तंभ लेखन किया।

इन्हें अब तक महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन द्वारा महाराणा सज्जनसिंह पुरस्कार, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी द्वारा फेलो, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा साहित्य वारिधि, उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा पं. रामनरेश त्रिपाठी, भोपाल की मधुवन संस्था द्वारा श्रेष्ठकला आचार्य, प्रसंग नर्मदा, छतरपुर द्वारा लोकसंस्कृति रत्न अलंकरण, श्री द्वारका सेवा-निधि, जयपुर द्वारा एडोल्फ-मागदालेना हैनी सम्मान।, सृजन मंच, बड़ी द्वारा स्वर्ण पदक, लोकसंस्कृति शोध संस्थान, चुरू द्वारा झवेरचंद मेघाणी स्मृति स्वर्ण पदक जैसे और कई पुरस्कारों-सम्मानों से नवाजा गया है। इसके अलावा देश-विदेश की लगभग 500 पत्र-पत्रिकाओं में उनके 9000 से अधिक आलेख उनके लेखन-गौरव में वृद्धि करते हैं।

डॉ. एस. के. सामर राज्य स्तर पर सम्मानित

उदयपुर। परिवार कल्याण के क्षेत्र में वर्ष 2017-18 में उत्कृष्ट कार्य करने के फलस्वरूप राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल सांइस (पीआईएमएस) उमरड़ा के डॉ. सुरेन्द्र कुमार सामर को सम्मानित किया गया। इस सम्मान में प्रशस्ति पत्र, नकद राशि एवं शिल्ड प्रदान की गई। यह समारोह राज्य सरकार द्वारा विश्व जनसंख्या दिवस पर जयपुर में आयोजित किया गया।

पुरस्कार प्रदाता चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री कालीचरण सराफ ने सामर की सेवा भावना की प्रशंसा की। अध्यक्षता चिकित्सा स्वास्थ्य राज्यमंत्री बंशीधर खंडेला ने की। समारोह को प्रमुख शासन सचिव नवीन जैन, निदेशक डॉ. सुनील मित्तल एवं सचिव आरूषि मलिक ने संबोधित किया।

पीआईएमएस के परिवार कल्याण कार्यक्रम प्रभारी डॉ. सामर ने अपने संस्थान की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि परिवार कल्याण संबंधी विविध सेवाएं वर्ष 2015 से सफलतापूर्वक चल रही हैं। अब तक 4117 सफल नसबन्दी आपरेशन किये जा चुके है। इसमें नई तकनीक एनएसवी द्वारा 132 पुरुषों की नसबन्दी की गई।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशिष अग्रवाल ने बताया कि डॉ. एस. के. सामर द्वारा परिवार कल्याण संबंधी उत्कृष्ट सेवाओं के फलस्वरूप राज्य सरकार द्वारा उन्हें पुरस्कृत किया गया। हमारे अन्य कार्यों की तरह डॉ. सामर की यह उपलब्धि हमारे गौरव में वृद्धि का कारक बनी है। उन्होंने डॉ. सामर तथा उनके दल के सदस्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि इनकी कार्यप्रणाली से दूसरे लोग भी प्रभावित होकर संस्थान का नाम रोशन करेंगे। इस अवसर पर प्राचार्य व डीन डॉ. चन्द्रा माथुर ने बताया कि हमें उम्मीद है कि हमारे द्वारा नसबंदी के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों से अधिकाधिक लोग लाभान्वित होंगे।

पीआईएएफटी के छात्रों के परिधान पहन रैंप पर उतरे देश के जाने माने मॉडल्स-

- एल्युमिनेटी-2018 में ट्रेंडी डिजाइनर परिधानों से रूबरू हुए उदयपुराईट्स-

- लॉ रोजा-मीलिट्री प्रिंट, राजस्थान के शहरों की संस्कृति और क्लासी मैसी थीम पर आधारित रहा फैशन शो-

उदयपुर। पेसिफिक विश्वविद्यालय के पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी एंड मॉस कम्युनिकेशन की ओर से 15 जुलाई को सुखाड़िया रंगमंच टाउन हॉल में वार्षिक समारोह एल्युमिनेटी-2018 फैशन शो आयोजित किया गया। शो के दौरान देश के ख्यातनाम मॉडलों ने पीआईएफटी के विद्यार्थियों द्वारा तैयार किए गये लॉ रोज़ा, हिलटॉप, राजस्थान रॉयल्स और क्लासी मैसी थीम पर परिधान पहन कैटवॉक किया।

फैशन शो का शुभारंभ मुख्य अतिथि फिल्म अभिनेत्री राइमा सेन, फिल्म निदेशक आर्यमन रामसे, लीला देवी अग्रवाल, पाहेर के वित्त सचिव आशीष अग्रवाल, पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी की डायरेक्टर शीतल अग्रवाल ने किया।

- डॉ. तुक्तक भानावत -

प्रारंभ में पेसिफिक के विद्यार्थियों ने गणेश वन्दना प्रस्तुत की। शो के कोरियोग्राफर एवं डिजाइनर गगन कुमार थे।

स्वागत करते हुए पेसिफिक विश्वविद्यालय के वित्त सचिव आशीष अग्रवाल ने कहा कि उदयपुर में फैशन को लेकर खासा टेलेंट है। जरूरत है तो सिर्फ उसे तराशने की। संस्थान के विद्यार्थियों ने इस समारोह को लेकर एक माह पूर्व ही तैयारी शुरू कर दी थी जो आज रंग लाई है। पीआईएफटी की हमेशा यह कोशिश रहेगी कि वह विद्यार्थियों को बेहतरीन प्लेटफार्म उपलब्ध कराएं।

शो में सबसे पहले गुलाब और गुलकंद से प्रेरित थीम ला रोजा पर आधारित परिधानों का प्रदर्शन किया गया जिसमें छात्रों ने गुलाब की पंखुड़ियों के आकार और टीन और टोन को इस्तेमाल करते हुए आकर्षक डिजायनर वस्त्र पहने जब मॉडल्स रैंप पर उतरी तो सभी ने उनका स्वागत तालियों की गड़गड़ाहट के साथ किया।

इसके बाद हिलटॉप राउण्ड में मिलिट्री प्रिन्ट और रंगों का प्रयोग किये हुए परिधानों बारी थी जिन्हें विद्यार्थियों ने गतिशील और प्रभावशाली बनाने के लिए फूलों और रफल्स जैसे तत्वों का प्रयोग कर कमाल के संयोजन से तैयार किया। इन परिधानों को प्रस्तुति को दर्शकों ने खूब सराहा।

रणबंका और हंसमत पगली फिल्म के बाल कलाकार अव्य अग्रवाल ने शो में एबीसीडी फिल्म के गीत बेजुबां पर डांस की धमाकेदार प्रस्तुति दी और रैम्प पर वॉक कर सभी की तालियां बटोरी।

इसके बाद राजस्थान रॉयल्स राउण्ड में राजस्थान की विभिन्न शहरों और संस्कृतियों से प्रेरित परिधानों को प्रस्तुत किया गया।

इसमें कपड़ों पर कांच एवं गोटा पत्ती का उपयोग किया गया। मॉडल्स ने पारंपरिक प्रिंट लहरिया और बंधेज का उपयोग कर राजस्थान की संस्कृति को प्रस्तुत किया जिसे सभी की सराहना मिली।

सभी राउंड में ज्वेलरी सेटअप और मैकअप को लेकर खासी मेहनत दिखाई दी जिसने दर्शकों को ज्वेलरी में ताजापन का अहसास करवाया। शो के कोरियोग्राफ़र डिजाइनर गगन कुमार थे। उन्होंने थीम बेस्ड और परंपरागत कोरियोग्राफी के साथ ड्रामा, इमोशन को जीवंत करते हुए लाइट और म्युजिक का शानदार इस्तेमाल किया। डिजाइनर गगन कुमार के निर्देशन में पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी एंड मॉस कम्युनिकेशन के विद्यार्थियों ने लेटेस्ट और ट्रेंडी परिधानों से रू-ब-रू करा फैशन को जीवंत कर दिया। इस दौरान विद्यार्थियों की एक के बाद एक सांस्कृतिक प्रस्तुति ने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया।

समारोह में बेस्ट स्टूडेंट्स का अवार्ड हीना लोढ़ा, गिरीजाती राजू, हर्ष तेवानी, वसंत माली, शगून माहेश्वरी, अशिया खान, आंचल चुघ, सृष्टि पुरोहित, मोहम्मद आसेफ को दिया गया। संचालन पीआईएफटी की आंचल चुघ एवं अलीशिया मैसी ने किया। एल्युमिनेटी-2018 फैशन शो में इंस्टीट्यूट के छात्रों ने शीतल

अग्रवाल के निर्देशन में विभिन्न गतिविधियों में अपनी छाप छोड़ी।

पेसिफिक विश्वविद्यालय के वित्त सचिव आशीष अग्रवाल, शीतल अग्रवाल एवं अतिथियों ने फैशन शो के दौरान बेस्ट डिजाइनर फिमेल राउंड में प्रथम आंचल चुघ एवं देशना पीतलिया, द्वितीय शगून माहेश्वरी एवं तृतीय अमिशा पारदिया को पुरस्कृत किया। बेस्ट डिजाइनर मेल राउंड में तृप्ति व्यास प्रथम एवं नेहा कुमारी द्वितीय रही। बेस्ट थीम अवार्ड में प्रथम रॉयल राजस्थान व द्वितीय हिलटॉप रहे। बेस्ट डिजाइनर किड्स राउंड में प्रथम दिव्य महात्मा व द्वितीय रश्मी बजाज रही।

शो में पीआईएफटी फेकल्टी पैसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी एण्ड मास कम्युनिकेशन की एडमिन हेड फातिमा नाज़, फेकल्टी डिजायनर यशवंतकुमार जैन, मुकेशकुमार औदिच्य, आर्किटेक्ट हितेष मिस्त्री, प्रकृति दीक्षित पोरवाल, संगीता सिंघवी, राजेश्वरी लोढ़ा, सोनू सेठिया, राजेश शर्मा, प्रकाश शर्मा, कोमल सुखवानी, नाजनीन खान का विशेष योगदान रहा।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।